मम्मी, देखो नानाजी !

रेणू गुर्जर

मृत्यु यानी मौत से मुझे बहुत डर लगता है। मैंने किसी को अपने सामने मरते नहीं देखा। मेरे पापा दो साल से बीमार थे। बिस्तर पर से नहीं उठ पाते थे। उन्हें लकवा हो गया था। मुझे उनके ज़्यादा बीमार होने की खबर मिली। मैं ससुराल से अपनी माँ के घर पहुँची तो सारा परिवार उनके पास मौजूद था। मम्मी से बात हुई तो उन्होंने बताया कि डॉक्टर देख गया है और दवाई दे दी है। ठीक होने के बारे में कुछ जवाब नहीं दिया। उस दिन सारे परिवार वाले वहीं रुके। सुबह तबियत में सुधार होने पर दिन में सभी चले गए।

दूसरे दिन जब पापा को चाय दी तो उन्होंने मना कर दिया। कुछ देर बाद मम्मी से चाय माँगी। उन्होंने चाय पी। फिर आवाज़ लगाई और नहलाने को कहा। उन्हें नहलाया नहीं, हाथ-पाँव पौंछकर साफ कपड़े पहना दिए। उन्होंने खाना खाया। सुबह 4 बजे उनकी तबीयत फिर खराब हो गई। उन्होंने बड़े भैया और दीदी का नाम लिया और उन्हें बुलाने को कहा। दोनों को बुलाने के बाद उनसे बात की। बाद में उन्होंने बोलना बन्द कर दिया। सभी परिवार वालों को फोन किया और उन्हें बुलाया। शाम तक सभी आ गए। एक बहन नहीं आ पाई। शाम को उन्हें गीताजी का पाठ सुनाया गया जो उन्होंने पूरा सुना। अन्तिम अध्याय समाप्त होने वाला था। मेरी नज़र भाभी के हाथ पर थी। उनका हाथ पापा के सीने पर था। साँस लेने की प्रक्रिया में उनका हाथ ऊपर-नीचे हो रहा था। जैसे ही पापा की साँस थमी उनका हाथ रुक गया। सभी समझ गए थे लेकिन हमें आधे घण्टे तक रोने नहीं दिया गया।

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि पापा नहीं रहे। आँखें उनकी खुली थीं। ऐसा लग रहा था वे अभी बोलेंगे। पूरी रात हम पापा के पास बैठे रहे। सुबह उन्हें तैयार किया गया। सफेद कुर्ता-पायजामा, चूनड़ी का साफा बाँधा गया। ये उनके पसन्द के कपड़े थे। पापा इतने सुन्दर लग रहे थे जैसे कहीं जा रहे हों। पर, वे इतनी दूर गए कि वापस नहीं आए। कहते हैं जब कोई मरता है तो वह तारा बन जाता है। आसमान में एक तारा रोज़ चमकता है तो मैं और मेरा 5

माँ बताती है मेरा एक भाई था

विष्णु गोपाल

मेरी माँ अक्सर मुझे बताती है कि मेरा एक भाई था। हष्ट-पुष्ट, गोल-गोल। वह बहुत सीधा और शरीफ था। जब बच्चे उसको डाँटते तो वह उनकी माँ के पास जाकर ऐसी प्यारी और मासूम शिकायत करता कि उन बच्चों की माएँ अपने बच्चों से ज़्यादा मेरे भाई को स्नेह करतीं।

एक दिन वह बीमार हो गया। पापा बाहर नौकरी करते थे। माँ-पापा जो दवा-दारू कर सकते थे, उन्होंने किया। परन्तु वह बच नहीं पाया और 5 वर्ष की उम्र में वह नहीं रहा। बेटे की मौत के गम में पापा ने नौकरी छोड़ दी। माँ ने स्याणों (जानकारों) से पूछा। कोई कहता, "नज़र लगी थी।" कोई कहता, "ज़हर दिया गया था।" कोई कहता, "विधाता की यही इच्छा थी।"

फिर मेरा जन्म हुआ। घर में सब खुश थे। समय बदला। पापा के नौकरी छोड़ देने से मुझे वह सब नहीं मिल पाया, जो मेरे भाई को मिला था। परन्तु माता-पिता का साया मेरे साथ है। माँ के पास भाई के ढेर सारे किस्से हैं जिनको सुनकर मन प्रेम से भर जाता है। जब भी हम घर में अके ला महसूस करते हैं, बड़े भाई को याद करते हैं। वो होता तो सब कुछ सम्भाल लेता, वो होता तो मेरी मदद करता, वो होता तो ...।

चित्रः कनक